[This question paper contains 3 printed pages]

Roll No.	

ASME-23B-HLIT-II

हिन्दी साहित्य (पेपर-II)

HINDI LITERATURE (PAPER-II)

निर्धारित समय : 3 घंटे | अधिकतम अंक : 100

प्रश्न पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को कृपया सावधानीपूर्वक पढ़ें ।

1. इस प्रश्नपत्र में कुल आठ प्रश्न हैं जो हिन्दी में छपे हैं ।
2. प्रश्न संख्या 1 का उत्तर देना अनिवार्य है । शेष सात प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए।
3. प्रत्येक प्रश्न के अंक समान हैं । प्रश्न के लिए निर्धारित अंकों का विभाजन प्रत्येक प्रश्न / प्रश्न के भाग के सामने इंगित किए गए हैं। उत्तर स्पष्ट लिखावट में लिखिए । प्रश्न का उत्तर पूछे गए क्रम के अनुसार ही दीजिए।
4. प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी । आंशिक रुप से दिए गए प्रश्नों के उत्तर की गणना भी की जाएगी यदि उसे काटा नहीं गया हो । उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ें गए कोई भी पृष्ट अथवा उसके अंश को स्पष्ट रूप से काट दीजिए ।
5. उत्तर-पुस्तिका के पुनर्मूल्यांकन / पुन: जाँच की अनुमति नहीं है ।

1. निम्नलिखित अवतरणों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए:- 10

(अ) एहि बिधि करत पंथ पछितावा, तमसा तीर तुरत रथु आवा
बिदा किए करि बिनय निषादा, फिरे पायँ परि बिकल बिषादा॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई, जनु मारेसि गुर बाँभन गाई
बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा, साँझ समय तब अवसरु पावा॥
अवध प्रबेसु कीन्ह अँधिआरें, पैठ भवन रथु राखि दुआरें
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए, भूप द्वार रथु देखन आए॥

अथवा

कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर
बोले रघुमणि—"मित्रवर विजय होगी न समर,
यह नहीं रहा नर-वानर का राक्षस से रण
उतरीं पा महाशक्ति, रावण से आमंत्रण
अन्याय जिधर हैं उधर शक्ति ।" कहते छल-छल
हो गए नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल,
रुक गया कंठ, चमका लक्ष्मण-तेजः प्रचंड
धँस गया धरा में कपि गह युगपद, मसक दण्ड ।

(आ) ' .. साहित्य में, समाज में, कला में, जीवन में, सब जगह वही मनमोहक आरंभ, वही मनमोहक प्रवाह और अंत में वही गहरी खड्ड ! प्राणों का पक्षी उड़ान भरता है, लगता है कि वह आकाश की छत को छू लेगा, लेकिन एकाएक वह टूटकर गिर जाता है, मानो बिजली की मार से नष्ट हो गया हो। हम लोग खूब बढ़िया इमारत बनाते हैं, एक-एक पत्थर जोड़कर मंदिर सजाते हैं लेकिन अंत में जब पलस्तर होने लगता है, तब सारा घटाघोट पैरों की धुल हो जाता है, मिट्टी में मिल जाता है .. यह क्यों ? ही इसलिए है कि हमारे आदर्श डर की भीत पर कायम हैं , हमारी विशाल भवनों की नींव खोखली है । 10

अथवा

किसान पक्का स्वार्थी होता है,इसमें संदेह नहीं । उसकी गाँठ से रिश्वत के पैसे बड़ी मुश्किल से निकलते हैं, भाव-ताव में भी वह चौकस होता है, ब्याज की एक-एक पाई छुड़ाने के लिए वह महाजन की घंटों चिरौरी करता है, जब तक पक्का विश्वास न हो जाय, वह किसी के फुसलाने में नहीं आता, लेकिन उसका सम्पूर्ण जीवन प्रकृति से स्थायी सहयोग है । वृक्षों में फल लगतें हैं, उन्हें जनता खाती है; खेती में अनाज होता है, वह संसार के काम आता है; गाय के थन में दूध होता है, वह खुद पीने नहीं जाती है; दूसरे ही पीते हैं, मेघों से वर्ष होती है; उससे पृथ्वी तृप्त होती है । ऐसी संगति में कुत्सित स्वार्थ के लिए स्थान कहाँ?

2. 'कबीर की भाषा' इस विषय पर अपने विचार उदाहरण सहित परिभाषित करें । 20

3. अंधेर नगरी नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। 20

4. 'सुरसागर का सर्वाधिक मर्मस्पर्शी एवं वाग्वैदग्ध्यपूर्ण अंश भ्रमरगीत है" – कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए । 20

5. चन्द्रगुप्त नाटक की एतिहासिकता पर प्रकाश डालिए । 20

6. 'सरोज स्मृति' कविता दुख और निराशा से लड़ने की शक्ति देती है –कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए। 20

7. 'अँधेरे में' कविता का मूल कथ्य अस्मिता की खोज है - कथन की विवेचना कीजिए । 20

8. 'शेखर एक जीवनी' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

***